



अहिंसा के प्रचार-प्रसार में आचार्य श्री का योगदान

□ श्री हसमुख शांतिलाल शाह

प्रचार-प्रसार स्वयं के आचार से ही ठीक ढंग से हो सकता है। आचार्य श्री ने अहिंसा महाव्रत का स्वीकार १० साल की लघु आयु में ही करके जैन-साधुत्व की दीक्षा ग्रहण कर ली।

शुभ-कार्य में प्रवृत्त होने से हिंसा से निवृत्ति हो जाती है और स्वाध्याय-सामायिक इन दोनों से अहिंसा का पालन होता है, इसलिये आचार्य श्री ने स्वाध्याय-सामायिक को महान् बताकर उस प्रवृत्ति पर भारी जोर दिया— फरमान किया और उसके लिये संगठनों/मंडलों की रचना करने की प्रेरणा देकर नियमित रूप से स्वाध्याय-सामायिक की व्यापकता द्वारा हिंसा से निवृत्त रहने का घनिष्ठ रूप से/सघनता से प्रचार-प्रसार किया।

स्वाध्याय-सामायिक के साथ-साथ अन्य शुभ-प्रवृत्तियों में रत होने के लिये आपने सर्वहितकारी समाजसेवी संस्थाओं की रचना करने की प्रेरणा दी। जिसके फलस्वरूप कई आत्माओं को पदाधिकारी एवं सदस्य बनकर शुभ कार्यों में प्रवृत्त होने से हिंसा से निवृत्त होने का अवसर मिला। उनमें तीन संस्थाएँ जीवदया की प्रवृत्ति के लिये ही निम्नतः गठित की गईं :—

- (१) जीवदया, धर्मपुरा।
- (२) जीवदया अमर बकरा ठाट, भोपालगढ़।
- (३) पशु क्रूरता निवारण समिति, जयपुर।

हिंसा-विरोधक संघ, अहमदाबाद को भी आपका मार्गदर्शन/सहयोग मिलता रहा और आपकी प्रेरणा से जीवदया प्रेमियों का भी सहयोग मिलता रहा।

आपकी प्रेरणा से ८५ आत्माओं ने अहिंसा महाव्रत को स्वीकार करके जैन-दीक्षा ग्रहण की, जिनमें ३१ मुनिराज और ५४ महासतियां जी समा-विष्ट हैं।

आपने ३० से भी अधिक ग्रंथों का निर्माण किया, जिनके पठन के समय पाठक हिंसा से मुक्त रहते हैं।

आपने सतारा (महाराष्ट्र) में स्थंडिल जाते समय काले नाग को मारते मानव-समुदाय को ललकार कर नाग को मुक्त कराके अपनी भोली में लेकर नवकार मंत्र सुनाकर जंगल में छोड़ दिया। ऐसा आत्म-विश्वास, सर्वजीवों के प्रति मैत्री, करुणा और अहिंसा भाव को आत्मसात् करने वाले आचार्य श्री में ही हो सकता है न ?

राजस्थान में मारवाड़ अकाल सहायता कोष की स्थापना आपकी प्रेरणा से हुई। इसके माध्यम से २७ करोड़ के फंड से ५ लाख पशुओं की रक्षा की गई। आचार्य श्री ने सैलाना में १९६५ में अपने प्रवचन में बताया कि भगवान महावीर ने साधु और गृहस्थ के अहिंसा के आचार के भेद बताये तो आनन्द ने गृहस्थ की जान-बूझकर दुर्भाव से हिंसा नहीं करने की प्रतिज्ञा स्वीकार कर ली।

आपने पीपाड़ के प्रवचन में फरमाया कि संयम और ज्ञान से मन की हिंसा रोकने का कार्य सरल होता है इसलिए ऐसा करें। सन् १९८८ में सवाई-माधोपुर और जयपुर के बीच में निवाई के पास के गांव में हो रही पशुबलि को आपने अपने उपदेश से सदा के लिए बन्द करवा दिया।

आपके सुदीर्घ जीवन के अहिंसा-पालन से अभिभूत होकर निमाज में आपके संथारा-स्वीकारने पर कसाइयों के नेता श्री हरिदेव भाई ने निर्णय किया और पालना भी की कि जब तक संथारा होगा तब तक निमाज में कोई भी पशुवध नहीं होगा और मांस का त्याग मुसलमान परिवार भी करेंगे।

आचार्य श्री के प्रभाव से उनके महाप्रयाण के अवसर पर राजस्थान सरकार ने भी सारे राज्य में बूचड़खाने बन्द करवाये।

आचार्य श्री की प्रेरणा से अनेक जीवदया प्रेमी जीवदया की प्रवृत्ति में जुट गये हैं, जिनमें गृहस्थों में जयपुर निवासी श्री सी. एल. ललवानी और श्री पारसमल जी कुचेरिया प्रमुख हैं।

आचार्य श्री ने अपने आचार/आचरण द्वारा अहिंसा के पालन प्रचार-प्रसार में जो योगदान दिया, ऐसा योगदान देने के लिये संनिष्ठ सतत प्रयास करने की हमें प्रेरणा-सामर्थ्य प्राप्त हो जिससे हम उन्हें सच्ची श्रद्धांजली अर्पण कर सकें और सभी जीवों को शाश्वत सुख दिलाने में निमित्त बनकर अपना कर्म-क्षय कर सकें, इस दिशा में प्रगति कर सकें, ऐसी अभ्यर्थना।

—मानद मंत्री, हिंसा विरोधक संघ, ४ वंदन पार्क,
स्टेशन के समीप, मणिनगर (पूर्व) अहमदाबाद-३८० ००८